वैदिक व्याख्यान माला — ३५ वाँ व्याख्यान

[अश्विनौ देवताके मन्त्रोंका निरीक्षण]

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रीके कार्य और व्यवहार

[१]

[यह व्याख्यान नागपूर विश्वविद्यालयमें ता. २९-१२-५७ के दिन हुआ था]

लेखक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

साहित्य-वाचस्पति, वेदाचार्य, गीतालङ्कार

अध्यक्ष- स्वाध्याय मण्डल

स्वाध्यायमण्डल, पारडी

मूल्य छः आने

ॐ

[अश्विनौ देवताके मन्त्रोंका निरीक्षण]

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रीके कार्य और व्यवहार

वेदमें देवताओंके राज्यका वर्णन है। सर्वोपरि ब्रह्म और प्रकृति है। ब्रह्म निष्क्रिय है और सब कुछ प्रकृति करती है। यह लोकशाही राज्य व्यवस्थाका आदर्श है। इसीको वैदिक भाषामें 'जानराज्य' कहते हैं। सब जनोंद्वारा जिसका राज्यशासन होता रहता है, वही जानराज्य है। इसमें 'ब्रह्म' सबके ऊपर है पर वह कुछ भी करता नहीं, 'प्रकृति' सब करती है। प्रकृतिका अर्थ 'प्रजाजन' है। ब्रह्म सबसे श्रेष्ठ सबका आधार, सबका आश्रयस्थान है, पर वह कुछ करता नहीं। आजके लोकराज्यके राष्ट्रपति जैसे रहते हैं, वे सबके ऊपर हैं, पर उनको कुछ भी करनेका अधिकार नहीं, वैसा ही यहां 'ब्रह्म' है। प्रकृति अर्थात् प्रजा सब करती है, उसी तरह लोकराज्यमें प्रजानियुक्त मंत्री ही सब करते हैं। यह ब्रह्म और प्रकृतिके वर्णनसे बताया है। यह पूर्ण लोकराज्यका ही उत्तम स्वरूप है।

देवताएं विश्वराज्यके मंत्री

बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि आदि देव, जो प्रकृतिसे उत्पन्न हुए हैं वे इस जगत्‌का सब व्यवहार करते हैं। येही विश्वराज्यके विविध मंत्री हैं—

वेदमंत्रोंमें प्रायः विश्वरूपी विश्वराज्यका तथा विश्वराज्यके संचालक शक्तियोंका वर्णन है। विश्वराज्यकी संचालक शक्तियां ही इन्द्र, वायु, सूर्य, अग्नि आदि हैं। ये शक्तियां जैसी विश्वमें हैं वैसी ही मनुष्यमें भी हैं। इसलिये कहा है कि—

ये पुरुषे ब्रह्म विदुः
ते विदुः परमेष्ठिनम् ॥ अथर्व. १०।७।१७

'जो मनुष्य शरीरमें ब्रह्म जानते हैं वे परमेष्ठीको जानते हैं।' वेदका गूढ आशय जाननेकी यह चाबी है। विश्व इतना बडा है, उसका आकलन करना कठिन है। इसलिये पिण्ड शरीरमें वही व्यवस्था है, उसको जाननेसे विश्वव्यवस्थाका ज्ञान हो सकता है।

पिण्ड ब्रह्माण्डकी व्यवस्था

ब्रह्माण्ड	पिण्ड	पिण्ड समूह (राष्ट्र)
विश्व	शरीर	समूह शरीर, समाज
ब्रह्म (परमात्मा)	आत्मा	संघात्मा
शिव	जीव	जीवसंघ
देवगण	इंद्रियगण	शासकवर्ग

यहां विदित हो सकता है कि जो विश्वमें है वही जीवके शरीरमें है और जो जीवके शरीरमें है वही समष्टि शरीर अर्थात् व्यावहारिक अर्थमें राष्ट्रमें है। यह ठीक तरह समझमें आगया, तो वेदका रहस्य समझमें आगया ऐसा समझना योग्य है।

ब्रह्म, परब्रह्म, आत्मा, परमात्मा, ईश, ईश्वर आदि नाम एक विशाल विश्वव्यापक शक्तिके हैं। वैसा ही जीवआत्मा शरीरमें है। परमात्मा 'दावानल' है तो जीवात्मा 'चिनगारी' है। परमात्मा विश्वमें है तो जीवात्मा शरीरमें है। परमात्माको जानना कठिन है, पर जीवात्माको जानना उससे सुगम है, इसलिये कहा है कि—

दावानल और चिनगारी

'जो पुरुषमें— मनुष्य शरीरमें ब्रह्म देखते हैं, अर्थात् जीवात्माको जानते हैं वे परमात्मा, परब्रह्मको जानते हैं।

जो चिनगारीको जानते हैं वे दावानलको जानते हैं। ' विश्वको जाननेके लिये शरीरको जानना चाहिये। विश्वकी सब शक्तियां शरीरमें हैं। विश्वमें पूर्णरूपसे जो शक्तियां हैं वेही शक्तियां अंशरूपसे शरीरमें हैं। इसलिये कहा है कि ' पिण्डका यथार्थ ज्ञान होनेसे ब्रह्माण्डका ज्ञान होता है। '

विश्वमें और व्यक्तिमें पंचभूत

यह तत्व समझनेके लिये संपूर्ण विश्व पंचभूतोंका बना है और यह मानव शरीर भी पंचभूतोंका ही बना है। इसलिये कहा है मानव शरीरमें पंचभूतोंको जाननेसे विश्वके पंचभूत जाने जा सकते हैं।

यही दूसरे शब्दोंमें ऐसा कहा जा सकता है कि यह विश्व ३३ देवताओंका बना है, वैसा ही यह शरीर भी ३३ देवताओंका बना है। जो विश्वमें है वही शरीरमें भी है। विश्वमें जैसी ३३ देवताएं हैं वैसी शरीरमें भी ३३ देवताएं अंशरूपसे हैं। अतः शरीरमें ३३ देवताओंका ज्ञान हुआ तो विश्वके ३३ देवताओंका ज्ञान हो सकता है।

पुरुषमें ब्रह्म

ये पुरुषे ब्रह्म विदुः
ते विदुः परमेष्ठिनम् ॥ अथर्व १०।७।१७

' जो पुरुषमें ब्रह्म जानते हैं वे परमेष्ठीको जानते हैं ' इसका भाव यह है। ' इस तरह व्यक्ति और विश्वमें समानता है यही हमने देखा। एक व्यक्तिमें जो तत्व हैं वे ही व्यक्ति समूहमें होते हैं, इस कथनका विरोध कोई कर नहीं सकता। देखिये व्यक्तिके मस्तकमें ज्ञान, बाहुओंमें बल और शौर्य, मध्यमें वीर्य और पांवोंमें गति है। येही गुण समाजमें भी होते हैं। समाजमें ज्ञानी, शूर, धनी और कर्मचारी रहते हैं। येही समाज शरीरके चार अवयव हैं जिनको ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कर्मचारी कहते हैं। व्यक्तिमें जो गुण हैं वे ही समाजमें गुणी करके प्रसिद्ध होते हैं। इस रीतिसे व्यक्ति, समाज या राष्ट्र और विश्वका संबंध है यही जानना चाहिये। वेदका रहस्य अर्थ जाननेके लिये यह संबंध ठीक तरह जानना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा वेदका रहस्य अर्थ समझमें नहीं आ सकता। इसकी सारिणी यह है—

विश्व--राष्ट्र--व्यक्तिका सम्बन्ध

विश्वमें देवता	राष्ट्रमें शासक	व्यक्तिमें इंद्रिय
विश्व	राष्ट्र	शरीर
ब्रह्म	राष्ट्रपति	जीव-आत्मा
प्रकृति	प्रजा	शरीर
इन्द्र	सेनापति	मन
मरुत्	सैनिक	इंद्रियगण
वायु	रक्षक	प्राण
सूर्य	दर्शनकार	नेत्र
चन्द्र	मननशील	मन
अग्नि	वक्ता	वाणी

इस रीतिसे विश्वकी देवताएं व्यक्तिमें किस रूपमें हैं और राष्ट्रमें किस रूपमें रहती हैं यह जाना जा सकता है। इस तरह विश्वशक्ति, राष्ट्रशक्ति और व्यक्तिशक्ति परस्पर सम्बन्धमें किस रीतिसे रहती है, यह जाननेसे सब वेदमंत्रोंका रहस्य स्पष्ट हो जाता है। पर इसका निश्चय तबतक नहीं होता, जबतक वेदमंत्र समझमें आना अशक्य है। इसलिये यह परस्पर सम्बन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है।

शरीरमें इन्द्र शक्ति

शरीरमें इन्द्रशक्ति उत्पन्न होती है इस विषयमें उपनिषद्का यह प्रमाण है—

अन्तरेण तालुके। य एष स्तन इव अवलंबते।
सा इन्द्र योनिः। तै. उ. १।६।२

' तालुपर जो स्तन जैसा लटकता है, यह इन्द्र शक्ति उत्पन्न करनेका स्थान है। '

शरीरमें इन्द्र शक्ति तालूके ऊपर रही इन्द्र ग्रंथीसे उत्पन्न होती है। इसी तरह शरीरमें ३३ देवताओंके स्थान हैं वहांसे ३३ शक्तियां मनुष्यको प्राप्त होती हैं और उनसे यह शरीर कार्यक्षम रहता है। इन केन्द्रोंपर मनका संयम करनेसे वे शक्तियां प्राप्त होती हैं। शरीरमें जो प्रकृति है उसमें ये शक्तियां हैं। इनसे शरीर व्यापार ठीक चलता है।

राष्ट्रमें जो प्रजारूप प्रकृति है उसमेंसे इसी तरह शासक वर्ग उत्पन्न होता है। ये शक्तिकेन्द्र प्रजाकी शक्ति लेकर ऊपर आते हैं और राष्ट्रका शासन करते हैं।

इस तरह विश्वमें, राष्ट्रमें और व्यक्तिमें समान रूपमें कार्य हो रहा है। प्रायः वेदमंत्रोंमें विश्वशक्तियोंका वर्णन है,

इसको देखकर व्यक्तिके शरीरके नियम तथा राष्ट्रसंचालनके बोध प्राप्त करने चाहिये। वैदिक ऋषि इस दृष्टिसे विश्वकी ओर, राष्ट्रकी ओर और व्यक्तिकी ओर देखते थे। उसी दृष्टीसे हमने वेदमंत्रोंको देखना चाहिये।

अश्विनौ देवताका विचार

इन्द्र मरुत् सूर्य वायु चन्द्र अग्नि आदि ३३ मुख्य देव हैं। उनमें ' अश्विनौ ' भी एक देवता है। यह दो हैं और दोनों मिलकर साथ-साथ रहते हैं और दोनों मिलकर कार्य करते हैं। रोग दूर करना, आरोग्य बढाना, दीर्घायु देना आदि कार्य इनके हैं।

(१) देवानां भिषजौ (वा. य. २१।५३)
(२) दैव्यौ भिषजौ, (ऋ. ८।१८।८)
(३) भिषजौ (ऋ. १।११६।१६)

ये इनके नाम हैं, ये नाम इनके वैद्य होनेकी सूचना देते हैं। यदि ये वैद्य हैं तो इनको विश्वराज्यमें वैद्यकीय कार्य मिलना चाहिये। इसीलिये हमने इनको ' आरोग्यमंत्री ' कहा है। इनका मंत्रीमंडल इस प्रकार है—

परब्रह्म	राष्ट्रपति
प्रकृति	प्रजासमिति, राष्ट्रसंसद
इन्द्र, मरुत्	युद्ध मंत्री और उनके सैनिक
ब्रह्मणस्पति	शिक्षा मंत्री
बृहस्पति	,, ,, (सहायक)
अश्विनौ	आरोग्यमंत्री (शस्त्रकर्म और चिकित्सा करनेवाले)
अग्नि	प्रचार मंत्री
वायु	वाहन मंत्री,
यम	धर्म मंत्री
पूषा	पोषण मंत्री, अन्न मंत्री
अर्यमा	न्याय मंत्री

इस तरह यह मंत्री मंडल ३३ देवोंका है। इनमें ३ मुख्य हैं और ३० गौण हैं। इनमें भी १०।१० के तीन गण हैं। आज हमें केवल अश्विनौका थोडासा विचार करना है। इसका शीर्षक ' वैदिक समयके आरोग्य मंत्रीका कार्य और व्यवहार ' है। इसीका विचार आज करेंगे।

अश्विनौकी विद्वत्ताका विचार

' विद्वांसौ (ऋ. १।११६।११), विप्रौ ' (ऋ. ८।२६।९), ये पद इनकी विद्वत्ता दर्शाते हैं। ' वि-चेतसौ (ऋ. ५।७४।९) ' यह विशेषण इनका चित्त विशेष प्रौढ है वह भाव बताता है। ' कवी (ऋ. १।११७।२३) ' यह इनका नाम ये ' क्रान्तदर्शी ' हैं यह भाव बता रहा है। क्रान्तदर्शीका भाव दूरका देखनेवाला। वैद्यके-लिये इस गुणकी आवश्यकता है। रोगी आया तो उस रोगका भविष्यमें कौनसा दुष्परिणाम कैसा होगा, उसका निवारण किस उपचार द्वारा करना चाहिये, यह सब उसको मालूम होना चाहिये। अश्विनौ ऐसे थे।

' धिष्ण्यौ (ऋ.१।३।२), धियं जिन्वौ (ऋ. १।१८२।१) प्रियमेधौ (ऋ. ८।८।१८), ' ये उनके नाम इनकी बुद्धि-मत्ता दर्शा रहे हैं। ये बुद्धिमान् थे, बुद्धि इनको प्रिय थी, ये बुद्धिसे सब कार्य करते थे। यह भाव इनमें हैं।

' गंभीर-चेतसौ ' (ऋ. ८।८।२) इनका चित्त बडा गंभीर रहता था। रोगीकी अवस्था जानकर गंभीरतासे ये कार्य करते थे। रोगीके मनको सुदृढ रखना इस गंभी-रताका प्रयोजन था। ' न-वेदसौ ' (ऋ. १।३४।१) जिनसे किसी दूसरेको अधिक ज्ञान नहीं, अर्थात् येही अधिक ज्ञानसे युक्त हैं। रोगचिकित्सा संबंधी सबसे अधिक ज्ञान अपने पास रखनेवाले ये उत्तम ज्ञानी वैद्य तथा शस्त्रकर्मकर्ता थे।

' प्रचेतसौ ' (ऋ. ८।१०।४) विशेष बुद्धिमत्ताका कार्य करनेवाले ' प्रथमौ ' (ऋ. २।३९।३) चिकित्सा तथा शस्त्रकर्ममें जो प्रथम श्रेणीमें रहते हैं, ' मायाविनौ ' (ऋ. १०।२४।४) कुशलतासे अपना कार्य करनेवाले, मायाका अर्थ कौशल्य है।

' वाजयन्तौ ' (ऋ. ८।३५।१५) बलवान्, अन्नवान् ' वाजसातमौ ' (ऋ. ८।५।५) अन्न योग्य रीतिसे रोगीको देनेवाले, जिससे रोगी नीरोगी बने और बलवान् भी बने। औषध प्रयोग करनेकी अपेक्षा अन्न प्रयोगसे ही रोगदूर करनेवाले ये थे।

' विपन्यू ' (ऋ. ८।८।१९) उक्त कारणसे चारों ओर प्रशंसा जिनकी होती थी। ' वसू ' (ऋ. १।१५८।१) ' वसुविदौ ' (ऋ. १।४६।२) जिससे मानवोंका निवास उत्तम रीतिसे होता है उस वसुविद्यामें जो प्रवीण हैं। वैद्योंको यह ज्ञान चाहिये। निवास उत्तम रीतिसे हो ऐसे साधन तथा ज्ञान जिनके पास हैं।

*

' रिशादसौ ' (ऋ. ८।८।१७) रिश नाम रोग दोष आदिका है इसको खानेवाले अर्थात् नष्ट करनेवाले वैद्य होते है । ' रक्षो-हणौ ' (ऋ. ७।७३।४) राक्षसोंका नाश करनेवाले, रोगोत्पादक कृमियोंको ' रक्षः ' कहते हैं । इनका नाश ये करते हैं और रोगियोंको राक्षसोंके आक्रमणसे बचाकर नीरोग स्वस्थ तथा आरोग्यपूर्ण बनाते हैं ।

' प्रत्नौ ' (ऋ. ६।६२।५) पुरातन कालसे प्रसिद्ध, ' निचेतारौ ' (ऋ. १।१८४।२) औषधोंका संग्रह करनेवाले, चिकित्साके उपाय सदा अपने पास रखनेवाले, भरपूर औषधोंका संग्रह अपने पास रखनेवाले ।

' विश्व-वेदसौ ' (ऋ. १।४७।४) सब ज्ञान अपने पास रखनेवाले, सब उपाय तथा साधन अपने पास रखनेवाले, चिकित्साके सब साधन अपने पास तैयार रखनेवाले । ' वर्धनौ ' (ऋ. ८।८।५) बढानेवाले, चिकित्सा कर्मकी कुशलता बढानेवाले ' रुद्रौ (रुद्-द्रौ ऋ. १।१५८।१) रोदनको दूर करनेवाले, रोगी तथा उसके संबंधी रोते हैं, पर रोगी इनके पास गया तो रोगमुक्त होता है, इसलिये रोनेका कोई कारण शेष नहीं रहता, ' रुद्रौ ' का अर्थ ' भयानक ' ऐसा भी है । शस्त्र क्रिया करनेमें ये भयानक होते हैं, शरीरको काट-कूटकर रथके दुरुस्त करनेके समान ये ठीक करते हैं उस समय इनकी भयानकता प्रकट होती है ।

' वल्गू ' (ऋ. ६।६२।५) ये सुन्दर सुकुमार हैं । वैद्य दीखनेमें सुन्दर होने चाहिये । इनकी सुन्दरता देखकर रोगी आनंदित हो जांय । यह रोगीका रोग दूर करनेमें सहायक होनेवाला गुण है । वैद्य कुरूप होनेसे सुन्दर रहा तो चिकित्सा करनेमें वह सुन्दरता सहायक होती है ।

' पुरु-मन्द्रौ ' (ऋ. ८।५।४) बहुतोंको हर्षित करनेवाले, रोग दूर करनेके कारण जो नीरोग होते हैं वे इनसे आनंदित होते हैं । इस कारण ' पुरु-प्रियौ ' (ऋ. ८।५।४) अनेकोंको ये प्रिय होते हैं । ऐसे वैद्य प्रिय होना स्वाभाविक ही है । ' प्रेष्ठौ ' (ऋ. १।१८१।१) ये प्रिय रहते हैं ।

' पुरु-शाक-तमौ ' (ऋ. ६।६२।५) अनेक कार्य करनेकी शक्ति रखनेवाले ये हैं । चिकित्साके अनेक कार्य ये उत्तम रीतिसे कर सकते हैं । ' पुरू-वसू ' (ऋ. १।४७।१०) अनेक निवासक शक्तियां इनके पास रहती हैं । वसुका अर्थ धन, तथा निवास करानेकी शक्ति, जो इनके पास विशेष है ।

' प्रातर्यावाणौ ' (ऋ. २।३९।२) ' प्रातर्युजौ ' (ऋ. १।२२।१) प्रातःकाल रोगीके पास जानेवाले, सबेरे ही रोगीकी परीक्षा करनेके लिये जुटनेवाले, प्रातःकालसे अपना कार्य करनेवाले ।

' रत्नानि बिभ्रतौ ' (ऋ. ५।७५।३) रत्नोंका धारण करनेवाले । रत्नोंके भस्मोंसे तथा रत्नोंके रंगोंसे चिकित्सा करनेवाले, अपनेपास रत्नोंको रखनेवाले ।

' विद्युतं तृषाणौ ' (ऋ. ७।६९।६) बिजलीकी जिनको तृषा है, प्यास है । चिकित्सा करनेके लिये जो विद्युतका बर्ताव करते हैं, ऐसे ये अश्विनौ वैद्य हैं । अपने अश्विनौ देवोंकी विद्या किस तरहकी थी, उनकी अपने व्यवसायमें कितनी पूर्णता थी यह इन गुणोंके मननसे ज्ञात हो सकता है । हमारे वैदिक समयके आरोग्य मंत्रीके ये गुण हैं । आज भी इन गुणोंसे युक्त पुरुष आरोग्य मंत्रीके स्थानपर आरूढ हो सकते हैं । वैदिक समयकी आरोग्य मंत्रीकी योग्यता इससे विदित हो सकती है ।

आरोग्यमंत्रीका संरक्षण सामर्थ्य

वैदिक समयके आरोग्य मंत्री अपनी सेना रखते थे और शत्रुके आक्रमणको रोक सकते थे । प्रत्येक मंत्री इस तरह सेनासे सुसज्य रहता था । इस विषयमें देखिये—

' वाजिनीवन्तौ ' ऋ. (१।१२०।१०) ' ' वाजिनी-वसू ' (ऋ. २।३७।५) बलवर्धक अन्न जिनके पास है, बलवर्धक अन्न अपने पास रखनेवाले । इस अन्नसे इनके अनुयायी बलवान् बनते हैं, और इनके कारण इनकी संरक्षण शक्ति बढती है ।

' गो-पौ ' (ऋ. १०।४०।१२) गायोंका रक्षण करनेवाले, (गोपौ) रक्षण करनेवाले ये अश्विनौ हैं । ' जगत्-पौ (ऋ. ८।९।११) जगत्का रक्षण करनेवाले, ' नृ-पती ' (ऋ. ७।६७।१) मानवोंके रक्षक, ' मर्त्य-त्रौ ' (ऋ. ६।६२।८) मर्त्योंका, मनुष्योंका रक्षण करनेवाले, ' जनानां अवितारौ ' (ऋ. १।१८१।१) जनताका संरक्षण करनेवाले । ये वैद्य होनेसे सबका रोगोंसे संरक्षण करते हैं, उसी तरह अन्य प्रकारसे रक्षण भी करते हैं । ' छर्दिः पौ ' (ऋ.८।९।११) घरका रक्षण करनेवाले, ' परस्पौ ' (परः पौ) (ऋ. ८।९।११) शत्रुसे रक्षण करनेवाले, रोगरूपी शत्रुसे

संरक्षण करनेवाले, 'वीरौ' (ऋ. २।३९।२) ये वीर हैं, शत्रुसे बचाते हैं, 'वीळु-पाणी' (ऋ. ७।७३।४) बलवान् भुजाओंसे युक्त, 'वृत्रहन्-तमौ' (ऋ. ८।८।९) रोगकृमियोंका नाश करनेवाले। ये शब्द इनका रक्षण सामर्थ्य बता रहे हैं। इनमें कई पद रोग दूर करनेके सामर्थ्य परक हैं, पर कई शत्रुको दूर करनेके अर्थमें भी हैं।

'मयो भुवौ' (ऋ. १।९२।१८) सुख देनेवाले नीरोगिताका सुख इनसे प्राप्त होता है। 'भुरण्यू' (ऋ. ६।६२।७) 'भुरणौ' (ऋ. ७।६७।८) भरणपोषण करनेवाले, कृशको योग्य अन्न देकर हृष्टपुष्ट करनेवाले 'धर्तारौ' (ऋ. ७।७३।४) जीवनका धारण करनेवाले, 'गोमघौ' (ऋ. ७।७१।१) गौरूपी धन अपने पास रखनेवाले, पंचगव्यसे लोगोंके रोग दूर करनेवाले, गौसे उत्पन्न होनेवाले पदार्थोंसे भरण पोषण करवाले।'

'मधुपौ (ऋ. १।१८०।२) 'मधुपातमौ' (ऋ. ८।२२।१७) 'मधूयुवौ' (ऋ. ५।७३।८) 'मधुवर्णौ' (ऋ. ८।२६।६) ये पद अश्विनौ मधुपीनेवाले, मधका उपयोग करनेवाले, मधके वर्णवाले थे ऐसा बताते हैं। वैद्य लोग अपनी औषधि मधके साथ देते हैं, मध स्वयंगुणकारी है और औषधका गुण पूर्ण रूपसे रोगीको देनेवाला है। यह बात प्रसिद्ध है। अश्विनौ ये वैद्य मधका विशेष उपयोग करते थे, यह इन पदोंसे सिद्ध होता है। रोगोंसे संरक्षण वे मधके प्रयोगसे करते हैं।

'वावृधानौ' (ऋ. ८।५।१२) बढनेवाले, उत्तम वैद्य होनेके करण इनका यश बढता है, 'धर्मवन्तौ' (ऋ. ८।३५।१३) चिकित्साका धर्म जिनमें उत्तम रीतिसे विद्यमान रहता है, 'मंहिष्ठौ' (ऋ. ८।५।६) जो महान् हैं, श्रेष्ठ हैं, उत्तम वैद्य होनेके कारण यह श्रेष्ठता है, 'मघवानौ' (ऋ. १।१८४।५) औषधिरूपी धन जिनके पास विपुल है, 'मदन्तौ' (ऋ. १।१८४।२) आनंदित रहनेवाले, सदा प्रसन्नचित्त जो होते हैं।

इनका रहना सहना, इनका संरक्षण कार्य, रोगादिसे बचाव करनेका इनका सामर्थ्य विशेष रहता है। युद्धोंमें जो जख्मी होते हैं, अन्य रीतिसे जो अपंग बनते हैं' उन सबका रक्षण करते हैं। समय पडा तो ये अपनी सेनासे भी अपना तथा अपने पास रहनेवालोंका रक्षण करते हैं।

आरोग्य मंत्रीका उत्साह

आरोग्य मंत्रीका तथा उनके साथ जो कार्यकर्ता होते हैं उनका उत्साह अपूर्व होना चाहिये। इस विषयमें देखिये–

'तनूपौ' (ऋ. ८।९।११) शरीरका पालन करनेमें ये समर्थ हैं। अपने शरीर ये जैसे उत्तम रखते थे, उसी तरह रोगियोंके शरीर भी उत्तम अवस्थामें रखते थे, अर्थात् शरीरके पालन करनेकी विद्या वे अच्छी तरह जानते थे। 'अजरौ' (ऋ. १।११२।२) ये जरा रहित रहते हैं, रोगियोंको भी जरा रहित करते हैं। 'अश्रान्तौ' (ऋ. ८।५।३१) ये कभी थकते नहीं, सदा उत्साहसे अपना कार्य करते हैं। 'युवानौ' (ऋ. १।११७।१४) ये सदा तरुण रहते हैं, वृद्धोंको भी तरुण बनाते हैं। 'रराणौ' (ऋ. १।११७।२४) सुशोभित दीखते हैं, शोभासे सदा संयुक्त रहते हैं। 'तन्वा शुंभमानौ' (ऋ. १।३९।२) शरीरसे शोभनेवाले, शरीरसे शोभा युक्त दीखनेवाले। 'अमर्त्यौ' (ऋ. ८।२६।१७) अमर जैसे दीखते हैं। 'अर्वाचीनौ' (ऋ. ५।७४।९) प्राचीन होनेपर भी इनके शरीरपर प्राचीनता दीखती नहीं, परंतु ये अर्वाचीन हैं ऐसा ही दीखता है, वृद्ध होनेपर भी तरुण दीखनेवाले, 'अस्रिधौ' (ऋ. ३।५८।७) जिनमें कोई क्षति नहीं है, जिनका शरीर निर्दोष है। 'अहर्विदौ' (ऋ. ८।५।९) दिनका महत्त्व जाननेवाले, दिनका समय कैसा है, ऋतु कैसी है, काल कैसा है यह जानकर उपचार करनेवाले। यह गुण वैद्योंमें अवश्य रहना चाहिये। वर्षका ऋतु, उष्ण शीतकाल आदि ठीक तरह जानकर उपचार करनेवाले ये अश्विनौ थे।

ये स्वयं उत्साहित रहते थे और दूसरोंको उत्साहयुक्त करनेमें समर्थ थे। ऐसे ही आरोग्य मंत्री रहने चाहिये।

आरोग्यमंत्रीकी दक्षता

आरोग्य मंत्री स्वयं दक्ष रहकर सब कार्य करे। 'अधप्रियौ' (ऋ. ८।८।४) अपने नीचे रहनेवाले लोगोंपर प्रेम करनेवाले ये थे। अधिकारीमें यह गुण अवश्य चाहिये। अधिकारी अपने कार्यालयके लोगोंपर प्रेम करे, उनके हितका विचार करे। 'अनिंद्यौ' (ऋ. १।१८०।७) निंदनीय व्यवहार करनेवाले न हों, सदा उत्तम ही प्रशंसनीय आचरण करें।

'अनपच्युतौ' (ऋ. ८।२६।७) अपने शुद्ध मार्गसे भ्रष्ट न होनेवाले, अपने शुद्ध मार्गपर रहनेवाले, 'अ-तूर्त-दक्षौ' (ऋ. ८।२६।२) जिनकी दक्षताका बल कभी कम नहीं होता, कोई इनके बलमें क्षति उत्पन्न नहीं कर सकता, 'अ-दाभ्यौ' (ऋ. ५।७५।७) जिनको कोई दबा नहीं सकता, दबाकर इनसे अयोग्य कार्य कोई करा नहीं सकता।

'अनुशासितारौ' (ऋ. १।१३९।४) अनुशासनके अनुसार कार्य करनेवाले, अनुशासनका त्याग कभी न करनेवाले, सदा अनुशासनमें रहनेवाले, 'ऋतावृधौ' (ऋ. १। ४७।१) सरलताके साथ बढनेवाले, सत्य मार्गपर रहनेवाले' 'दक्ष-पितरौ' (वा. य. १४।३) दक्षतासे जो कार्य करते हैं उनका संरक्षण करनेवाले ।

'अ-वद्य-गोहनौ' (ऋ. १।३४।३) किसीकी कुछ गुप्त बात हो तो उसको गुप्त रखनेवाले, विशेषकर रोगीकी गुप्त बातोंका गोपन करनेवाले, किसीकी गुह्य बातको प्रकट न करनेवाले, 'अ-रेपसौ' (ऋ. १।१८१।४) दोष रहित, शरीर मन तथा आचरणसे निर्दोष रहनेवाले, 'ऋत-प्सू' (ऋ. १।१८०।३) सत्य स्वरूप, सत्यका पालन करनेवाले, 'पुरु-त्रौ' (ऋ. २।३९।१) रक्षितारौ' (ऋ. २।३९।६) अनेक प्रकारसे रक्षण करनेवाले, रोगादिकोंसे बचाव करनेवाले ।

'ऋभुमन्तौ' (ऋ. ८।३५।१५) कारीगरोंके साथ रहनेवाले, अपने साथ कुशल पुरुषोंको रखनेवाले, 'उग्रौ' (ऋ. २।३९।३) रोगादि शत्रुओंका नाश करनेवाले, 'उग्रौ' (ऋ. १।१५७।६) उग्र शूरवीर, 'नरौ' (ऋ. १। ३।२) नेता, नेतृत्व करनेवाले । 'वृषणौ (ऋ. १।११२।८) बलवान, बल बढानेवाले, 'इषयन्तौ' (ऋ. ८।५।५) उत्तम अन्न अपने पास रखनेवाले, 'जेन्या-वसू' (ऋ. ७। ७४।३) मानवोंका निवास जिससे होता है; उस वसुको जीतनेवाले, मानवोंके निवास साधनको पास रखनेवाले ।

'शंभुवौ (ऋ. ८।८।१९) कल्याण करनेवाले, 'शंभविष्ठौ' (ऋ. २।३९।५) 'शंभू' (ऋ. १।४६।१३) 'शुभस्पती' (ऋ. १।३।१) जनताका कल्याण, हित करनेवाले, जो कभी किसीका अहित नहीं करते, 'शुचि-व्रतौ' (ऋ. १।१५।११) जिनका व्रत पवित्र कार्य करना ही है, जो कभी अपवित्र कार्य नहीं करते, 'शुभस्पती' (ऋ. १।३४।६) शुभकार्य करनेवाले ।

'शक्रौ (ऋ. २।३९।३) सामर्थ्यवान्, 'शचि-ष्ठौ' (ऋ. ४।४३।३) अपनी शक्तिसे कार्य करनेवाले, 'शची-पती' (ऋ. ७।६७।३) शक्तिके स्वामी, जिनके अधीन दूसरोंका हित करनेकी शक्ति है, 'शत-क्रतू' (ऋ. १। ११२।२३) सैंकडों प्रकारके शुभकर्म करनेवाले,' सचा-भुवौ' (ऋ. १।३४।११) साथ साथ रहनेवाले, 'शुभ्रौ' (ऋ. ७।६८।१) निर्दोष, निष्कलंक ।

'सत्यौ' (ऋ. १।१८०।७) अपने कर्ममें सत्य रीतिसे विजयी होनेवाले, 'सन्तौ' (ऋ. १।१८४।१) सब कार्यको करनेवाले, 'सुगोपौ' (ऋ. १।१२०।७) उत्तम रक्षण करनेवाले, 'सुदक्षौ' (ऋ. ३।५८।७) उत्तम दक्षतासे कार्य करनेवाले, 'समनसौ' (ऋ. १।९२।१६) एक मनसे कार्य करनेवाले, 'सध्रीचीनौ' (ऋ. १०। ११६।१) साथ-साथ रहकर कार्य करनेवाले, 'स-जोषसौ' (ऋ. ३।५८।७) प्रीतिपूर्वक उत्साहसे कार्य करनेवाले ।

'परिज्मानौ' (ऋ. १।४६।१४) चारों ओर रोगियोंके रोग दूर करनेके हेतुसे भ्रमण करनेवाले, 'चरन्तौ कामप्रेण मनसा' (ऋ. १।१५८।२) रोगनिवारणके हेतुसे भ्रमण करनेवाले, 'आशु-हेषसौ' (ऋ. ८।१०।२) सत्वर जानेवाले, शीघ्रगतिसे जानेवाले, 'अध्रि-गू' (ऋ. ५।७३।२) विना रोक आगे बढनेवाले, अर्थात् रोगियोंकी चिकित्सा करनेके लिये शीघ्रतासे जानेवाले ।

'सुरथौ' (ऋ. १।२२।२) उत्तम रथ जिनका है, 'स्वश्वौ' (ऋ. ७।६८।१) उत्तम घोडे जिनके पास होते हैं 'वातरंहौ' (ऋ. १।११८।१) वायु वेगसे जानेवाले, 'श्येनपत्वौ' (ऋ. १।११८।१) 'श्येनस्य जवसौ' (ऋ. ५।७८।४) श्येन पक्षीके वेगसे जानेवाले ये पद अश्विनौका वेग बताते हैं । यह वेग इसलिये है कि रोगीके पास शीघ्रातिशीघ्र पहुंचकर उनके रोग शीघ्र दूर किये जांय ।

दानका स्वभाव

आरोग्य मंत्री उदार अथवा दानशील होने चाहिये । गरीबोंको भी इनकी उदारताका लाभ मिलना चाहिये । 'दशस्यन्तौ' (ऋ. ६।६२।७) 'सुदानू' (ऋ.

१।११२।११) 'दानूनस्पती' (ऋ. ८।८।१६) दान देनेवाले, रोगीकी शुश्रूषा धनके लोभसे न करनेवाले।

'द्रवत्पाणी' (ऋ. १।३।१) अपने हाथसे शीघ्र-कार्य करनेवाले, 'पुरु-दंससौ' (ऋ. १।३।२) बहुत कार्य करनेवाले, कितना भी कार्य आपडा तो भी न थक-नेवाले, 'सुयुजौ' (ऋ. ७।७०।२) दोनों मिलकर एक मतसे कार्य करनेवाले।

'सुश्रुतौ' (ऋ. २।३९।६) उत्तम अध्ययन जिन्होंने किया है, 'स्थविरौ' (ऋ. १।१८१।७) अपनी विद्यामें उत्तम वृद्ध, उत्तम कुशल, 'सुवीरौ' (ऋ. ८।२६।७) रोग दूर करनेमें श्रेष्ठ वीर 'हिरण्यपेशसौ' (ऋ. ८।८।२) 'हिरण्यवर्तनी' (ऋ. १।९२।१८) सोनेके रंगसे शोभनेवाले।

आरोग्य मंत्रियोंका आकाशगमन

ये आरोग्यमंत्री विमानमें बैठकर आकाशमें संचार करते थे। 'दिविस्पृशौ' (ऋ. १।२२।२) द्युलोकको स्पर्श करनेवाले ये थे। विमानमें बैठनेके विना आकाशमें संचार नहीं हो सकता।

'दिव आजातौ' (ऋ. ४।४३।३) द्युलोकसे ये आये हैं। 'दिवोनरौ' (ऋ. १०।१४३।३) द्युलोकके ये नेता हैं। 'दिव्यौ' (ऋ. ४।४३।३) ये दिव्य अर्थात् द्युलोकमें हुए हैं। द्युलोकके ये 'देवौ' (ऋ. १।२२।२) देव हैं।

ऐसा वर्णन करनेवाले इन अश्विनौके वाचक ये पद ये आकाश यानसे जाते हैं यह सिद्ध करते हैं।

अनश्व रथ

घोडेके विना चलनेवाला रथ अश्विनौका था, इस विष-यमें नीचे लिखा मंत्र देखिये—

अश्विनोः असनं रथं
अनश्वं वाजिनीवतोः।
तेनाऽहं भूरि चाकन॥ ऋ. १।१२०।१०

'(वाजिनीवतोः अश्विनोः) 'अन्नवाले अश्विनौका (अनश्वं रथं) घोडेरहित रथको (असनं) मैं प्राप्त करता हूं। (अहं तेन भूरि चाकन) मैं उससे बहुत लाभ प्राप्त करूंगा।

इससे सिद्ध होता है कि अश्विनौका रथ घोडोंके बिना भी जाता था, आकाशगामी विमान थे, घोडोंके बिना चलनेवाला रथ था और घोडोंसे चलनेवाला रथ भी था। अनश्व रथका वर्णन और देखिये—

अनेनो वो मरुतो यामो अस्तु
अनश्वश्चिद् यमजत्यरथीः।
अनवसो अनभिशू रजस्तूः
विरोदसी पथ्या याति साधन्॥ऋ. ६।६६।७

'हे मरुतो! (वः यामः) आपका वाहन (अनेनः) निर्दोष है,) अनश्वः) उसको घोडे नहीं जोतते, (अरथीः यं अजति) जिसको सारथी भी चलानेके लिये नहीं होता, (अनवसः) जिसको संरक्षण साधन नहीं है, (अनभिशुः) जिसको लगाम नहीं है, परंतु जो [रजस्तूः] धूली उडाता हुआ चलता है ऐसा तुम्हारा रथ द्यावापृथिवीके अन्दरके मार्गसे सब प्रकारकी साधना करता हुआ जाता है।' यह मरुतोंका अश्वरहित परंतु धूली उडाता हुआ चलनेवाला रथ है। ऊपर जिसका वर्णन है वह अश्विनौका रथ अश्व-रहित है।

घोडा नहीं, लगाम नहीं, पृथक् सारथी नहीं पर धूली उडाता हुआ चलता है यह रथ कोई ऐसा रथ है कि जो घोडेके बिना वेगसे चलता है।

'वातरंहा' (ऋ. १।११८।१) वायुके वेगसे चलने-वाला अश्विनौका रथ है, 'श्येन पत्वा' (ऋ. १।११८।१) श्येनपक्षीके समान आकाशमें जाता है, 'श्येनस्य जवसा' (ऋ. ५।७८।४) श्येनपक्षीके वेगसे चलता है, यह विमान ही होगा, क्योंकि श्येन पक्षी कभी भूमिपरसे वेगसे जाता ही नहीं, इसका वेग आकाशमें ही रहता है। इस-लिये श्येनके समान जानेका अर्थ आकाशमेंसे ही जाना है।

यहां आकाशयान, घोडेके यान, तथा घोडेके बिना चलनेवाले यान हमारे देखनेमें आये। आकाशमें चलनेवाले यान तथा घोडेके बिना धूली उडाते हुए चलनेवाले यान किस साधनसे चलते थे इसका पता नहीं चलता, पर आकाशयान तीन अहोरात्र चलते रहे ऐसा वर्णन मंत्रमें हैं—

तिस्रः क्षपः तिरहाति व्रजद्भिः अन्तरिक्षप्रुद्भिः।
ऋ. १।११६।४

तीन रात्री और तीन दिन अति वेगसे अन्तरिक्षमेंसे जाने-वाले हवाई यान थे। किसी यंत्रसाधनसे जाते होंगे, पर ऐसे जाते थे इसमें संदेह नहीं है।

रथ कैसे थे ?

इस अश्विनौका रथ ' अत्य ' (ऋ. १।१८०।२) वेगसे जानेवाला था, ' आशुः ' (ऋ. ४।४३।२) शीघ्र गतिसे रथ जाता था, ' जवीयान् ' (ऋ. १।११७।२) वेगके साथ जानेवाला रथ, ' मनसः जवीयान्, (ऋ. १०। ३९।१२) मनसे भी वेगवान्, ' रघुवर्तनिः ' (ऋ. ८। ९।८) शीघ्रगतिसे जानेवाला ' स्ववान् ' (ऋ. १।११८।१) अपनी शक्तिसे रहनेवाला, अपनी शक्तिसे चलनेवाला । ये रथके वर्णन करनेवाले पद बता रहे हैं कि रथ अश्विनौके कैसे शीघ्रगामी रथ थे ।

' दिविस्पृक् ' (ऋ. ८।५।३५) यह रथका नाम बता रहा है कि अश्विनौके कई रथ आकाशको स्पर्श करनेवाले थे अर्थात् वे अन्तरिक्षसे जाते थे ।

' हिरण्ययः ' (ऋ. १।१३९।३) ये रथ सुवर्णके नकशीके कामसे सुभूषित थे । ' हिरण्याभिशुः ' (ऋ. ८।५। २८) सुवर्ण जैसे चमकनेवाले जिनके लगाम या चाबूक थे। ' सुपेशाः ' (ऋ. १।४७।२) सुन्दर रंगरूप रोगन आदि जिनपर लगा हुआ है । ' सुखः ' (ऋ. १।१२०।११) रथ बैठनेवालोंको सुख देनेवाला सुख देनेवाला था। ' शंतमः ' (ऋ. ५।७८।४) अत्यंत आनंद देनेवाला रथ था । ' वसुमान् ' (ऋ. १।११८।१०) ' वसूयुः ' (ऋ. ४।४४।११) ' वसुवाहनः ' (ऋ. ५।७५।१) धनवान्, देखनेमें धनसे युक्त था । ' नर्यः ' (ऋ. १।१८०।२) मानवका हित करनेवाला, मनुष्योंका सहायक, अश्विनौके रथमें औषधादि साधन होनेसे उनका रथ लोगोंका हित करनेवाला कहा जाता था, ' इषां वोळ्हा ' (ऋ. ७।६९।१ अनेक प्रकारके पौष्टिक अन्नोंका वहन करनेवाला, रोगियोंको देनेके लिये अनेक प्रकारके पौष्टिक अन्न इस रथमें रहते थे, ' अनेहा ' (ऋ. ८।२२।२) दोषरहित रथ अश्विनौका था।

' अश्वः ' (ऋ. ७।७०।१) अश्वावान् ' (७।७२।२) घोडे जिसको जोते हैं, ' वाजी ' (७।७०।१) घोडेसे युक्त ' वृषभिः अश्वैः युक्तः ' बलवान् घोडे जिसको जोते हैं, ऐसा वर्णन घोडोंके रथका है ।

' त्रिचक्रः ' (ऋ. १।११८।२) तीन चक्रोंवाला, ' त्रिधातुः ' (ऋ. १।१८३।१) तीन दण्डे जिसमें लगे हैं, ' त्रिबंधुरः ' (ऋ. १।४७।२) तीन बैठकें जिसमें बैठनेके लिये हैं, ' पवयः त्रयः ' (१।३४।२) तीन पहिये जिसको लगे हैं, ' त्रयः स्कंभासः ' (ऋ. १।३४।२) तीन स्तंभ जिसमें लगाये होते हैं, ' वीड्वंगः ' (ऋ. ८।८५।७) मजबूत अंगोंसे युक्त इनका रथ था । ' विश्वसौभगः ' (ऋ. १।१५७।३) सब प्रकारकी सुंदरता इसमें है। ' शतोतिः ' (ऋ. ६।६३।५) सैकडों प्रकारके संरक्षण साधन जिस रथमें रहते हैं ।

' पृक्षः वहन् ' (ऋ. ५।७७।३) अन्नको लेजानेवाला, रोगियोंको देनेके लिये उत्तम अन्न तथा औषधादि जिसमें रहते हैं । ' घृतस्नुः ' (५।७७।३) ' घृतवर्तनिः ' (७।६९।१) घीको रखनेवाला, शहद रखनेवाला यह वर्णन पीछे आया ही है । ' गोमान् ' (ऋ. ७।७२।१) गौओंको पास रखनेवाला, अर्थात् गोरस अपने पास रखनेवाला अश्विदेवोंका रथ था ।

' उग्रः ' (ऋ. ५।७३।७) यह वीरतासे युक्त था, ' सेनाजूः ' (ऋ. १।११६।१) सेनाके साथ रहनेवाला इनका रथ था। इतनी तैयारीके साथ अश्वनौका रथ रहता था ।

' विदथ्यः ' (ऋ. १०।४१।१) युद्धमें जाने योग्य इनका रथ था । इस प्रकार इनके रथका वर्णन है ।

अब ' अश्विनौ ' देवताके नामों और विशेषणोंका थोडासा विचार किया, अब इनके विषयमें ब्राह्मण और निरुक्तमें क्या विचार किया गया है वह देखेंगे—

अश्विनौ देवताके विषयमें ब्राह्मणवचन

' अश्विनौ ' देवताके विषयमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें नीचे लिखे वचन मिलते हैं, जो इस देवताके स्वरूपको बताते हैं—

१ इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षं अश्विनौ, इमे हीदं सर्वं आश्नुवतां, पुष्करस्रजाविति अग्निरेवास्यै (पृथिव्यै) पुष्करं आदित्योऽमुष्यै (दिवे)॥
श. ब्रा. ४।१।५।१६

२ श्रोत्रे अश्विनौ ॥ श. ब्रा. १२।९।१।१३

३ नासिके अश्विनौ ॥ श. ब्रा. १२।९।१।१४

४ तद्यौ ह वा इमौ पुरुषाविवाक्ष्योः एतावेवाश्विनौ।
श. ब्रा. १२।९।१।१२

५ अश्विनावध्वर्यू ॥ ऐ. ब्रा. १।१८; श. ब्रा. १।१।२। १७; ३।९।४।३; तै. ब्रा. ३।२।२।१; गो. ब्रा. उ. २।६

६ अश्विनौ वै देवानां भिषजौ । ऐ. ब्रा. १।१८; कौ. ब्रा. १८।१

७ मुख्यौ वा अश्विनौ (यज्ञस्य) ! श. ब्रा. ४।१।५।१९

८ श्येताविव हि अश्विनौ । श. ब्रा. ५।५।४।१

९ सयोनी वा अश्विनौ । श. ब्रा. ५।३।१।८;

१० आश्विनाविव रूपेण (भूयांसं) । मं. ब्रा. २।४।१४

११ आश्विनं द्विकपालं पुरोडाशं निर्वपति । श. ब्रा. ५।३।१।८

१२ अश्विनोः द्विकपालः (पुरोडाशः) । तां ब्रा. २१।१०।२३

१३ वसन्तग्रीष्मावेवाभ्यां अश्विनाऽऽभ्यां (अवरुन्धे) । श. ब्रा. १२।८।२।३४

१४ अश्विभ्यां धानाः । तै. ब्रा. १।५।११।३

१५ अथ यदेनं (अग्निं) द्वाभ्यां बाहुभ्यां द्वाभ्यां अरणीभ्यां मंथन्ति, द्वौ वा आश्विनौ, तदस्य आश्विनं रुपं ॥ ऐ. ब्रा. ३।४

१६ गर्दभरथेनाश्विना उदजयताम् । ऐ. ब्रा. ४।९

१७ तदश्विना उदजयतां रासभेन । कौ. ब्रा. १८।१

१८ इममेव लोकमाश्विनेन (अवरुन्धे) । श. ब्रा. १२।८।२।३२

१९ अश्विनमन्वाह तदमुं लोकं (दिवं) आप्नोति । कौ. ब्रा. ११।२।१८।२

ये ब्राह्मण वचन अश्विनौ देवताका स्वरूप देखनेके लिये मनन करने योग्य हैं । इनका अर्थ देखिये—

१ ये पृथिवी और द्युलोक ये प्रत्यक्ष अश्विनौ हैं क्योंकि ये सबका भक्षण करते हैं । ये पुष्करमाला पहनते हैं, अग्नि पृथिवीका पुष्प है और सूर्य द्युलोकका पुष्प है । २ दोनों कान अश्विनौ हैं । ३ दोनों नाक अश्विनौ हैं । ४ दोनों आंख अश्विनौ हैं । ५ यज्ञमें जो दो अध्वर्यु होते हैं वे अश्विनौ हैं । ६ अश्विनौ ये देवोंके वैद्य हैं । ७ यज्ञमें मुख्य अश्विनौ हैं । ८ अश्विनौ गौर वर्णके हैं । ९ एक ही स्थानसे ये अश्विनौ उत्पन्न हुए हैं । १० अश्विनौ विशेष सुंदर हैं । ११-१२ अश्विनौके लिये दो थालियोंमें खानेको दिया जाता है । १३ वसन्त और ग्रीष्म ऋतुओंका संबंध अश्विनौके साथ है । १४ अश्विनौके लिये धान्य (भून कर जो लाजाएं होती हैं वे) दी जाती हैं । १५ अग्निका मन्थन दोनों हाथोंसे करते हैं, दोनों अरणियोंसे करते हैं, वह अश्विनौका रूप है । १६-१७ गधे जोडे हुए रथसे अश्विनौ ऊपर आते हैं । १८ इस भूलोकको अश्विनौके सामर्थ्यसे अवरुद्ध करता हूं । १९ अश्विनौके साहाय्यतासे उस स्वर्गलोकको अवरुद्ध करता हूं ।

ये ब्राह्मण वचन अश्विनौके स्वरूपको जाननेके लिये सहायक होनेवाले हैं । अतः इनका विचार अब करते हैं—

व्यक्तिमें अश्विनौका रूप

इन ब्राह्मण वचनोंमें अश्विनौका रूप वैयक्तिक शरीरमें कहां है यह बताया है ।

२-४ मानवी शरीरमें नाक, कान, और आंख ये अश्विनौ हैं । अश्विनौके नामोंमें 'नासत्यौ' (नास-त्यौ) यह एक नाम है । नासिकामें रहनेवाले यह इसका भाव है । नासिकासे श्वास तथा उच्छ्वास चलता है वह अश्विनौका रूप है । दायां और बायां शरीर भी अश्विनौका रूप है । नाक, कान, आंख इनमें दायां और बायां ऐसे दो भाग हैं । ये अश्विनौ हैं ।

नासिकासे प्राणका संचार होता रहता है । यही अश्विनौ देव शरीरमें रोग दूर करके आरोग्य स्थापनाका कार्य कर रहे हैं, दीर्घजीवन ये दे रहे हैं । अतः शरीरमें ये अश्विनौ हैं । दक्षिण दिशाका नासिका छिद्र शरीरमें उष्णता बढाता है और उत्तर दिशाका छिद्र शरीरमें शीतता उत्पन्न करता है । दोनों नासिका छिद्रोंसे सतत श्वास चलता नहीं । दो दो घण्टोंके पश्चात् श्वास बदलता रहता है । दाहिनेसे बाहिना और बाहिनेसे दाहिना इस तरह बदलता रहता है और इससे शरीरमें उष्णता और शान्तता होती रहती है और शरीर स्वस्थ रहता है । यदि नाकसे एक ही स्वर चलता रहेगा और दो घंटोंके पश्चात् दूसरा नहीं चलेगा, तो समझना चाहिये कि मनुष्य रोगी होगा । यह सूचना नासिकामें स्थित अश्विनौ देते हैं । यह स्वरशास्त्र एक बडा शास्त्र है और यह अश्विदेवोंका कार्य है ।

इसी तरह आंख और कानोंमें अश्विनौ कार्य करते हैं और शरीरके दाये और बाये अंगोंमें भी ये अश्विदेव कार्य करते हैं और इस शरीरको स्वस्थ रखते हैं । ये देवोंके वैद्य हैं । शरीरमें ३३ देव रहते हैं । सूर्य आंखमें, वायु नासिकामें, अग्नि मुखमें, दिशाएँ कानमें, आप् (जल)

शिस्नमें, मृत्यु नाभिमें, बाहुओंमें इन्द्र, छातीमें मरुत इस रीतिसे ३३ देवताएं मानवी शरीरमें रहती हैं। इन देवताओंकी शक्तिसे यह मनुष्य शरीर कार्यक्षम होरहा है और सब कार्य कर रहा है। इन देवोंको स्वास्थ्यसंपन्न रखनेका कार्य नासिकामें रहकर ये अश्विदेव कर रहे हैं। इसलिये ये इन देवोंके वैद्य हैं।

प्राणायामसे दीर्घायु प्राप्त होती है इसका कारण यही है कि प्राणायामसे-दीर्घश्वसनसे-रक्त शुद्धि होती है, इस शुद्ध रक्तसंचारसे शरीरमें रहे ३३ देवता सबल होते हैं। और देवता 'निर्जराः' अर्थात् जरारहित हुए तो मानव दीर्घायु प्राप्त कर सकता है। शरीर स्थानीय देवताओंको निर्जर अर्थात् जरारहित रखनेका कार्य ये अश्विनौ नासिकामें रहकर कर रहे हैं। इस तरह जराको दूर करना और तारुण्य तथा दीर्घायु देना यह इन अश्विनौका कार्य यहां हो रहा है।

इस रीतिसे विचार करनेपर पता लग जायगा कि शरीरमें श्वास उच्छ्वास ये नासिकासे कार्य करनेवाले अश्विनौ हैं और ये यहां देवोंके वैद्य हैं।

जो गुण व्यक्तिमें होते हैं, उन गुणोंसे युक्त पुरुष समाज, राष्ट्र या पंचजनोंमें होते ही हैं। ज्ञान शौर्य, पोषण और कर्म ये मनुष्यमें मस्तक, बाहू, पेट और पांवके अन्दर रहनेवाले गुण हैं। इन गुणोंसे युक्त पुरुष समाजके अवयव हैं। जैसा देखिये—

व्यक्तिमें	राष्ट्रमें
सिर—ज्ञान	ज्ञानी पुरुष राष्ट्रके सिर हैं
बाहु—शौर्य	शूर ,, ,, बाहु ,,
पेट—पोषण	धनी ,, ,, पेट ,,
पांव—गति, कर्म	कर्मचारी ,, ,, पांव ,,

इसी तरह 'वैद्य' राष्ट्रके आरोग्यवर्धक अधिकारी हैं। अश्विनौ शरीरमें नासिका स्थानमें रहकर शरीरका आरोग्य सुरक्षित रखते हैं, और वैद्य राष्ट्रका आरोग्य रक्षणका कार्य करते हैं, इसलिये राष्ट्रमें वैद्य ही अश्विनौ है इसका सूचक ब्राह्मण वाक्य यह है—

अश्विनौ वै (देवानां) भिषजौ।

ऐ. ब्रा. १।१८; कौ. ब्रा. १८।१

'अश्विनौ ये वैद्य ही हैं।' अर्थात् राष्ट्रका आरोग्यरक्षण करनेवाले अश्विनौ वैद्य ही हैं। इसलिये हमने अश्विनौको 'आरोग्यमंत्री' कहा है। वैद्यमें चिकित्सक वैद्य और शस्त्रकर्म करनेवाले ऐसे दो होते हैं। ये दोनों आरोग्यमंत्रीके स्थानपर रहें और राष्ट्रका आरोग्य संभालें।

यहां ऊपर दिये ऐतरेय ब्राह्मणके वाक्यमें 'देवानां भिषजौ' ऐसे पद हैं। ये देवोंके वैद्य हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि ये देवोंकी ही चिकित्सा करते हैं। चारों वेदोंमें जो अश्विनौके मंत्र हैं उनमें किसी भी देवताकी चिकित्सा उन्होंने की ऐसी बात नहीं है। अश्विनौके मंत्रोंमें उन्होंने मानवोंकी ही चिकित्सा की है। अर्थात् ये अश्विनौ देव हैं, ये मानवोंकी चिकित्सा करते रहते हैं। देव जरारहित, सदा तरुण तथा नीरोग रहते हैं, इसलिये उनको वैद्योंकी सहायताकी आवश्यकता रहती नहीं होगी।

इन्द्रको मेषके वृषण लगाये यह अपवाद है। बाकी अश्विनौने किसी देवकी चिकित्सा की ऐसा वर्णन वेदके मंत्रोंमें नहीं है। जो वर्णन है उससे यही सिद्ध हो रहा है कि अश्विनौने मानवोंकी ही चिकित्सा की थी। इसलिये राज्यशासनमें उनका स्थान 'आरोग्यमंत्री' का ही है। और आरोग्यमंत्रीके कार्य हम अश्विनौके मंत्रोंसे जान सकते हैं।

निरुक्तका निर्वचन

अब हम निरुक्तके 'अश्विनौ' के निर्वचनका विचार करेंगे—

अथातो द्युस्थाना देवताः। तासां अश्विनौ प्रथमागामिनौ भवतः। अश्विनौ यद् व्यश्नुवाते सर्वं, रसेनान्यो ज्योतिषाऽन्यः। अश्वैरश्विनावित्यौर्णवाभः तत् कावश्विनौ ? द्यावापृथिवी इत्येके, अहोरात्रावित्येके, सूर्याचन्द्रमसावित्येके, राजानौ पुण्यकृतौ इत्यैतिहासिकाः। तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भमनु तमो भागो हि मध्यमः ज्योतिर्भाग आदित्यः ॥ १ ॥ तयोरेषा भवति 'वसातिषु स्म चरथोऽसितौ ये त्वाविव ॥'

तयोः समानकालयोः समानकर्मणोः संस्तुतप्राययोः असंस्तवेन एषोऽर्द्धर्चो भवति वासात्यो अन्य उच्यते, उषः पुत्रस्तवान्य इति ॥ २ ॥

इह चेह च जातौ संस्तूयते पापेनालिप्यमान· तया तन्वा नामभिश्च स्वैः। जिष्णुर्वामन्यः सुमहत्तो वलस्येरयिता मध्यमः, दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊह्यत आदित्यः ॥ ३ ॥

प्रातर्युजा वि बोधयाश्विनावेह गच्छताम्।

ऋ. १।२२।१

प्रातर्योगिनौ वि बोधयाश्विनाविहा गच्छताम्।

निरुक्त १२।१

सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका।
उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु॥

ऋ. १०।१०६।६

सृण्येवेति द्विविधा सृणिर्भवति भर्ता च हन्ता च, तथा अश्विनौ चापि भर्तारौ, जर्भरी भर्तारावित्यर्थः। तुर्फरी तू हन्तारौ। नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका, नितोशस्य अपत्यं नैतोशं, नैतोशेव तुर्फरी क्षिप्रहन्तारौ। उदन्यजेव जेमना मदेरू, उदन्यजेवेति उदकजे इव रत्ने सामुद्रे चान्द्रमसे वा। जेमने जयमाने, जेमना मदेरू। ता मे जरायु अजरं मरायु, एतज्जरायुजं शरीरं शरदं अजीर्णम्। निरुक्त १३।५

अब द्युलोककी देवताओंकी व्याख्या करते हैं। इनमें अश्विनौ देव प्रथम आनेवाले हैं। ये सब व्यापते हैं, इसलिये इनको ‘अश्विनौ’ कहते हैं। इन दोमेंसे एक रससे व्यापता है और दूसरा प्रकाशसे व्यापता है।

(अश् व्यापना इस धातुसे अश्विनौ बना है, इसलिये इसका अर्थ व्यापनेवाला है।)

और्णवाभ ऋषि कहता है कि अश्विनौके पास घोडे रहते हैं इसलिये इनको अश्विनौ कहते हैं। ये अश्विनौ कौन हैं? ‘द्युलोक और पृथिवी लोक’ ऐसा कइयोंका मत है, ‘अहो रात्र’ ऐसा दूसरोंका मत है, ‘सूर्य चन्द्र’ ऐसा कइयोंका मत है। ‘पुण्यकर्म करनेवाले राजालोग’ ऐसा ऐतिहासिकोंका मत है। इनका समय आधीरात व्यतीत होनेके पश्चात्का है। जब प्रकाश फटने लगता है तब इनके उदयका समय होता है। इस कालमें जो अंधकारका समय होता है वह एक भाग है, वह मध्यम देवता है और जो प्रकाशका भाग है वह उत्तम भाग है वह सूर्य है। इस तरह अन्धकार और प्रकाश इस समय इकट्ठे रहते हैं ये ही अश्विनौ हैं।

ये दोनों एक ही कालमें आते हैं, एक ही कर्म करते हैं। इसका वर्णन ‘वसातिषु स्म’ इस मंत्रमें किया है। इनमें एक रात्रीका और दूसरा दिनका पुत्र है।

जयशील अन्य है और द्युलोकका पुत्र अन्य है। वह आदित्य है।

जिस तरह रात्री पोषण करनेवाली और नाश करनेवाली होती है, उस तरह अश्विनौमें एक देव पोषण करनेवाला और दूसरा रोगका विनाशक है।

यह निरुक्तका स्पष्टीकरण है। अश्विनौमें दो देव हैं, एक पोषण करता है और दूसरा विनाश करता है। ये दोनों वैद्य हैं। एक रोगका नाश करता है और दूसरा रोगीका पोषण करता है। इसके अतिरिक्त द्यावा-पृथिवी, सूर्य-चन्द्र, अहो-रात्र, अन्धेरा-प्रकाश, पोषक-संहारक ये भी अर्थ इनमें हैं। पुण्य कर्म करनेवाले राजा या राजपुरुष यह भी अर्थ निरुक्तकारने ऐतिहासिकोंका करके दिया है। ‘राजा’ के स्थानपर ‘राजपुरुष’ हम मान सकते हैं। इसलिये हमने ‘आरोग्यमंत्री’ यह अर्थ इनका माना है और मंत्रोंका विवरण आरोग्यमंत्रीके राज्याधिकारके अनुकूल किया है। इसका विद्वान् लोग विचार करें।

दो नक्षत्र

अश्विनौ नामके दो नक्षत्र आकाशमें हैं। वे प्रातःकालमें उदित होते हैं। ये नक्षत्र साथ-साथ रहते हैं। आधिदैविक सृष्टिमें इनका नाम अश्विनौ है।

अधिभूत सृष्टिमें अर्थात् प्राणियोंके राज्यशासन व्यवहारमें अश्विनौका अर्थ ‘आरोग्य-मंत्री’ नामक राजपुरुष हैं। ये राजे हैं, ये राजपुरुष हैं। इनके कर्म क्या-क्या थे इस बातका पता अश्विनौके मंत्रोंसे लग सकता है।

विश्वव्यापक देवताओंका राज्य है, उसमें जिस तरह बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, इन्द्र, वरुण आदिके पास एक-एक कार्य रखा है और वह कार्य उन देवताओंके वैदिक वर्णनमें किया गया है, उसी तरह अश्विनौ देवताके वर्णनमें इनका आरोग्यसाधनका कार्य वर्णन किया है। यह वर्णन आगे बताया जायगा।

व्यक्तिमें आध्यात्मिक दृष्टिसे नासिकामें स्थित ' नासत्यौ ' अर्थात् अश्विनौका कार्य भी विचारणीय है। परंतु यह अतिअल्प वर्णित हुआ है।

आरोग्यसाधनका इनका जो कर्म है वही विशेष रीतिसे वर्णन किया गया है।

इस समयतक अश्विनौ देवताके गुण वर्णन करनेवाले वैदिक पदोंका थोडासा विचार किया है। इससे अश्विनौ देवता ' स्वास्थ्य-मंत्री ' हैं यह स्पष्ट हो रहा है। इनके जो गुणबोधक पद यहां दिये हैं उनसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि इनमें ये गुण हैं अर्थात् वैदिक समयके ' स्वास्थ्यमंत्री ' में ये गुण थे—

१ ये ' देवोंके वैद्य ' हैं अर्थात् ये देव हैं और ये चिकित्सा करते हैं, ये रोग दूर करते हैं, लोगोंको स्वस्थ करते हैं, बलवान् करते हैं, दीर्घायु भी करते हैं। ये केवल देवोंकी ही चिकित्सा करते हैं ऐसा नहीं। वेदमंत्रोंका वर्णन देखनेसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि, ये मानवोंकी ही चिकित्सा करते हैं। वेदमंत्रोंमें जो इनके कर्म वर्णन किये हैं वे देखनेसे यह स्पष्ट दीख रहा है कि मानवोंकी ही ये चिकित्सा करते हैं।

ये देव हैं पर ये मानवोंकी चिकित्सा करनेके कार्यमें नियुक्त हैं।

२ ये अपनी चिकित्सा विद्यामें निपुण हैं, पर अन्य रीतिसे भी ये विद्वान्, शास्त्रज्ञ, शास्त्रनिपुण हैं। बहुश्रुत कहने योग्य अनेक विद्याओंमें ये प्रवीण हैं।

आजकलके चिकित्सक वैद्य या डाक्टर अपनी चिकित्सा शास्त्रमें जैसे प्रवीण होते हैं, वैसे न सही। परंतु गणित, भाषा, इतिहास, साहित्य, काव्य, नाटक, भूगोल, नागरिक-शास्त्र, जीवनशास्त्र आदि विद्याओंमें साधारण परिचय अवश्य रखते हैं, उसी तरह ये अश्विनौ देव ' विद्वान् ' थे, ' वि-प्र ' थे अर्थात् विशेष प्राज्ञ थे। ' कवि ' यह इनका विशेषण बता रहा है कि ये काव्यशास्त्र विनोदमें निपुण थे। ये बुद्धिमान् थे।

चिकित्सा योग्य रीतिसे करनेके लिये उत्तम बुद्धिमत्ता अवश्य चाहिये। निर्बुद्ध चिकित्सक उत्तम चिकित्सा कर नहीं सकेगा।

३ ये अश्विदेव गंभीर थे। चिकित्सकको गंभीर होना आवश्यक है। रोगीकी कुछ गुप्त बातें इनको मालूम हुई तो इन्होंने उनको गंभीरताके साथ गुप्त रखना आवश्यक है। रोगीको विश्वास चाहिये कि ये वैद्य मेरी गुप्त बातोंको गुप्त रखेंगे, ऐसा रोगीके मनमें विश्वास हुआ, तो ही वह रोगी अपनी सब बातोंको खुले दिलसे वैद्यको कहेगा। अतः वैद्यको गंभीर होना आवश्यक है।

४ प्रशस्त चित्तवाले अश्विनौ हैं, अपनी चिकित्सामें प्रथम अर्थात् पहिले हैं और मायावी हैं, अर्थात् अपने चिकित्सामें अत्यंत कुशल हैं। इनके दो काम हैं। एक औषधि प्रयोगसे रोगीका रोग दूर करना और शस्त्रकर्मसे रोगीको रोग मुक्त करना। इन दोनों कर्मोंमें इनकी परमश्रेष्ठ कुशलता है। साथ-साथ ये भोजनमें ऐसी औषधीयुक्त भोजन देते हैं कि जिससे रोगीका रोग दूर हो जाय, और औषध मैं लेता हूं यह भी उसको पता न लगे। यह अद्भुत सामर्थ्य इनमें था।

५ मानव इस भूमिपर सुखसे रहें इसलिये जैसा उसको चाहिये वैसा रहन-सहन, भोजन तथा अन्य उपचार अश्विनौ देव उसको देते थे। इसलिये उनको ' वसु-विदौ ' कहा है। यहां सुखसे निवास होनेके लिये जो आवश्यक साधन हैं उन साधनोंको ' वसु ' कहते हैं। इन साधनोंको ये अच्छी तरह जानते थे। इस कारण मानवोंको उत्तम मार्ग-पर ये ला सकते थे और मानवोंका जीवन सुखमय होनेके लिये जो करना आवश्यक है वह ये बताते थे। अर्थात् ये मानवका निवास सुखमय करनेके लिये जो ज्ञान मानवोंको उपदेश द्वारा देना आवश्यक था, वह ये देते थे।

६ रोगोंके कृमि होते हैं। वे कृमि मानवी शरीरमें जानेसे रोग उत्पन्न होते हैं। इन रोग कृमियोंके ' रक्षः, या राक्षस ' आदि नाम हैं। ' रक्षो-हणौ ' यह नाम इनको इसलिये दिया है कि ये अश्विनौ वैद्य इन रोग-कृमियोंका समूल नाश करते हैं। ' रिशादसौ ' यह इनका नाम भी वही अर्थ बताता है। ' रिश ' का अर्थ शरीरमें बिगाड करनेवाला जो होगा उसको विनष्ट करनेवाले ये वैद्य हैं। राक्षसोंके आक्रमणसे रोग होते हैं। कृमियोंके आक्रमणसे रोग होते हैं। इन सब रोगकृमियोंका नाश वैद्य करते हैं और रोगको निर्मूल करते हैं।

वेदमें रोगकृमियोंका अनेक स्थानपर वर्णन है। ये रोग कृमि सूर्यप्रकाशसे मरते हैं, रात्रीमें बढते हैं, अतः इनको रात्रिचर, निशाचर कहते हैं। इन सब कृमियोंको दूर करनेसे सब रोग समूल दूर हो सकते हैं।

७ अश्विनौ देव बडे सुन्दर हैं। वैद्य सुन्दर चाहिये। रोगीके सामने वैद्य सुन्दर, सजा हुआ, उत्साही, हंसते मुख, नीरोग स्थितिमें जाना चाहिये। जिसको देखते ही रोगीके मनपर ऐसा परिणाम होना चाहिये कि यह मेरा रोग अवश्य दूर कर सकेगा। इसके विरुद्ध यदि वैद्य रोगग्रस्त, निर्बल, दुर्मुख उदास, निस्तेज अवस्थामें जायगा तो रोगीपर विरुद्ध परिणाम होगा। अश्विनौके मंत्रोंमें अश्विदेव सुंदर हैं, सजे हुए हैं, कमलोंकी माला धारण करते हैं ऐसा जो वर्णन है, वह बोधप्रद है। वैद्योंको कैसा रहना चाहिये इसका बोध इन वर्णनोंसे प्राप्त हो सकता है।

अश्विनौ देव प्रातःकाल रोगीके घर जानेवाले हैं। वे प्रातःसमयमें उठते हैं और रोगीयोंके घर जाते हैं, उनको देखते हैं और जो उपचार करना हो वह करते हैं। इनमें आलस्य नहीं होता। रोगीको देखनेमें वे कभी आलस्य नहीं करते। उपचार करके रोगीका रोग दूर करनेमें वे आलस्य नहीं करते। किसी तरह रोगीकी सेवा करके उसको रोगमुक्त करनेमें ये शिथिलता नहीं करते। शस्त्रक्रिया करनी हो, औषधियोंसे चिकित्सा करनी हो, योग्य अन्न देकर रोगीको पुष्टी देनी है, ये सब कार्य करनेमें ये बडे दक्ष रहते हैं। इनकी शिथिलताके कारण किसीका रोग बढ गया ऐसा कभी नहीं होता।

९ रत्नोंको ये धारण करते हैं। रत्नोंके भस्म रोगनिवृत्तिके उपचार करनेके लिये अपने पास रखते हैं। औषधोंका प्रयोग करनेमें कितना भी व्यय हो वे करते हैं। व्यय होता है इसलिये वे कभी कंजूसी नहीं करते। रत्नोंका प्रयोग करते हैं, विद्युतका उपयोग करते हैं, अथवा कीमती औषध देना हो तो वे देते हैं। मुख्य बात रोगीको रोगमुक्त करना यह होती है। रोगीको स्वस्थ करना यह मुख्य उद्देश्य इनका रहता है। बाकी अडचनोंको ये देखते नहीं। इसी लिये इनकी चारों ओर प्रशंसा होती है।

१० अश्विनौ आरोग्यमंत्री थे यह यहांतक बताया है। ये आरोग्यमंत्री होनेके कारण इनको सैनिकोंमें भी औषध उपचार करनेके लिये जाना पडता था। जखमी सैनिकोंको उठाना, औषधोपचार करना आवश्यक था। इसलिये इनके पास रुग्ण पथक होते थे। हवाई जहाज रुग्ण शुश्रूषाके लिये इनके पास थे। रुग्ण शुश्रूषाके रथ थे। और पदाती पथक भी थे। तीन अहोरात्र इनके हवाई जहाज दूर देशमें गये थे और वहांसे जखमियोंको हवाई जहाजमें लेकर वे वापस आये ऐसा वेदमंत्रमें वर्णन है। ये रुग्ण पथक बडे कार्य करनेवाले थे। संदेश आते ही वे चल पडते थे और कार्य तत्परतासे करते थे। इस कारण इनको 'मानवोंके रक्षक' लोग कहते थे।

घरोंका अर्थात् गृहनिवासियोंका रक्षण ये करते थे। शत्रुसे रक्षण ये करते थे। इनके पास आवश्यक सेनाबल भी था। अर्थात् यह सेना रोगियोंकी शुश्रूषा करनेवालोंकी होती है। युद्धभूमिसे रोगी या जखमीको लानेका कार्य इनका होता था। इस कारण जखमीका और अपना बचाव होना चाहिये। इतना सेनाबल इनके पास रहता था। इस सेनाका उपयोग ये करते थे।

११ गौओंको ये अश्विनौ देव अपने पास रखते थे। गौका दूध, दही, घी, मल, मूत्र, श्रृंग आदि सब पदार्थ रोगनिवारक हैं। पीपकी नदीसे गौ बचाती है। इसका अर्थ ही यह है कि गौके उक्त पदार्थ पीप होने नहीं देते। रोगियोंके शरीरके दोष गौके गोरससे दूर होते हैं। गौके पदार्थ रोग दूर करते हैं और पोषण भी करते हैं।

१२ मधु अर्थात् शहदका उपयोग अश्विनौ देव करते थे। इनके रथमें मधका घडा रहता था। रोगीको ये औषध मधमें मिलाकर देते थे। मध स्वयं उत्तम पौष्टिक है और जिस औषधके साथ वह दिया जाता है, उस औषधका गुण वह पूर्णरूपसे रोगीके शरीरमें पहुंचा देता है। इसलिये अश्विदेवोंके रथमें मधका घडा रहता था।

१३ ये अश्विदेव शरीरका रक्षण करनेमें सिद्धहस्त थे। ये जरारहित अर्थात् नित्य तरुण थे। आयु बहुत होनेपर भी ये तरुण जैसे दीखते थे। अर्थात् ये अपने शरीरको भी उत्तम अवस्थामें सदा रखते थे। वृद्धोंको भी तरुण बनाते थे। आयु बहुत होनेपर भी नित्य तरुण रहते थे। इनके

अन्दर कोई दोष नहीं था। ये अपना शरीर सदा सुंदर रखते थे, और सदा उत्साही रहते थे।

१४ समयको वे जानते थे। यह समय कैसा है यह उनको मालूम होता था। वर्ष, ऋतु, मास, दिन कैसा है, इस समय क्या करना चाहिये इसका ज्ञान उनको था। ऋतुका विज्ञान उनको था। किस ऋतुमें कौनसे रोग होते हैं, उनसे बचनेके लिये क्या करना चाहिये इससे वे परिचित थे। मानवी आयुष्यमें भी ऋतु होते हैं। इन ऋतुओंमें मनुष्यने कैसा आचरण करना चाहिये, इस विषयको वे जानते थे। इस ज्ञानसे वे अनिंद्य किंवा प्रशंसा योग्य आचरण करते थे।

१५ अपने सुयोग्य मार्गसे वे कभी भ्रष्ट नहीं होते थे। कोई इनको दबाकर इनसे अयोग्य आचरण करावे यह हो नहीं सकता था। ये अनुशासनके अनुसार चलते थे। अनुशासनमें ये रहते थे। इसलिये सबपर इनका प्रभाव पडता था। सत्य मार्गपर ये चलते थे। सत्य और सरलताकी वृद्धि ये करते थे अर्थात् जो इनके संसर्गमें आजाय उनको भी सत्य और सरल मार्गपर ये चलाते थे। अनुशासनमें रहनेसे व्यक्तिका तथा राष्ट्रका कल्याण होता है यह इनका निश्चय था।

हरएक कार्य दक्षतासे ये करते थे। नहीं तो रोगीको आरोग्य निश्चयसे प्राप्त करा देनेका कार्य इनसे होना असंभव होगा। रोगीको भी ये नियमोंसे ही चलाते थे। दक्षता इनके कार्यमें सदा रहती थी। ये गुप्तताकी रक्षा करते थे। यह गुण वैद्योंमें रहना आवश्यक है। रोगियोंकी गुप्त बातें जानकर उनको प्रकट करना यह बडा दोष है। ऐसा वैद्योंको करना नहीं चाहिये। इसलिये सब रोगियोंकी गुप्त बातोंको ये गुप्त ही रखते थे।

१६ इनका आचरण दोषरहित रहता था। शरीर, मन तथा आचार व्यवहारमें इनसे दोष नहीं रहता था। रोगीका रोग दूर होजाय और उनका स्वास्थ्य उत्तम रीतिसे सुरक्षित रहे, इसके लिये जो करना आवश्यक होजाय, वह सब ये अश्विनौ देव करते थे। ये अपने साथ कुशल पुरुषोंको रखते थे। औषध निर्माण, औषधोंका वितरण, शस्त्रक्रिया आदि कार्य ये करते थे। इन कार्योंको योग्य रीतिसे करनेके लिये जिस तरहके कुशल लोग चाहिये उस तरहके कुशल लोग इनके पास सदा रहते थे और उनसे सब कार्य ये उत्तम रीतिसे कराते थे।

१७ मानवोंका निवास जिस रीतिसे सुखमय हो उस रीतिका अवलंबन ये करते थे। इसमें इनसे कसूर नहीं होती थी। ऐसा निर्विघ्नताके साथ करनेके लिये जितना बल चाहिये, उतना बल इनके पास था। ओहदेदारीकी दृष्टिसे यह करनेके लिये जो सामर्थ्य चाहिये वह उनमें था। उग्रता भी जितनी चाहिये उतनी इनमें थी, अन्यथा हरएक कार्य यथायोग्य रीतिसे होना असंभव है। अतः समयपर ये आवश्यक उग्रता, कठोरता भी दिखाते थे

सबका कल्याण करनेके लिये ये सदा कटिबद्ध रहते थे। प्रजाजनोंमें कोई रोगी न हो, कोई निर्बल न हो, सबके सब अवश्य हृष्टपुष्ट हों, कार्यक्षम हों इसलिये जो ज्ञान चाहिये, जो कुशलता चाहिये, जो व्यवस्था चाहिये वह सब इनमें थीं। उन शक्तियोंसे ये युक्त थे। इसलिये इनको कोई कठिनता प्रतीत नहीं होती थी। जो कर्तव्य आता था वह निर्दोष रीतिसे ये करते थे और सबका हित ये उत्तम रीतिसे करते थे। इसलिये लोग इनको निष्कलंक कहते थे। ये जो कार्य करते थे वह सत्यके प्रेमसे और अपना कर्तव्य समझकर करते थे। मनकी शुभ भावनासे ये सब कार्य करते थे।

१८ रोगियोंकी चिकित्सा करनेके लिये चारों ओर भ्रमण करना आवश्यक ही होता है। इसलिये ये आवश्यक हो इतना भ्रमण करते थे। रोग निवारण करनेकी इच्छासे वैद्योंको भ्रमण करना आवश्यक ही होता है। यह भ्रमण वे न करें, तो उनका कार्य ठीक रीतिसे हो ही नहीं सकता।

किसी समय वेगसे जानेकी आवश्यकता हो तो ये वेगसे जाते थे। ये अपने हवाई जहाजसे भी जाते थे। अथवा इनके खच्चरोंके तथा घोडोंके रथ तो थे ही। इनका जाना बिना प्रतिबंध सर्वत्र होता था।

इनके रथ उत्तम होते थे। इनके रथमें उपचारके साधन रहते थे। श्येन पक्षीके समान ये आकाशमें भी संचार करते थे। श्येन पक्षी बडे वेगसे उडते हैं, वैसे ये बडे वेगसे आकाशमेंसे जाते थे। और जहां पहुंचना चाहिये वहां शीघ्र पहुंचते थे।

१९ इन अश्विनौंका स्वभाव उदार था। दान देनेमें

इनकी सहज प्रवृत्ति थी। रोगीकी चिकित्सा ये किसी भी लालचसे नहीं करते थे, परंतु रोगीका कल्याण हो इस सदिच्छासे ही वे सब कार्य उपकार करनेकी भावनासे करते थे।

२० जो कार्य करना होता है वह शीघ्रताके साथ ये अश्विनौ देव करते थे। कार्य करनेसे वे थकते नहीं थे। वे अपने शास्त्रोंका अर्थात् चिकित्साशास्त्रका उत्तम अध्ययन करके चिकित्सामें अति प्रवीण बने थे। ये विद्यामें निपुण थे, ये विद्यावृद्ध अथवा ज्ञानवृद्ध थे। सुवर्णके समान ये तेजस्वी थे। ये अपने चिकित्साके कार्यमें प्रवीण थे।

यहां स्वास्थ्यमंत्रीके अन्दर कौनसे गुण चाहिये इसका संक्षेपसे वर्णन हुआ है। वैदिक समयमें आरोग्यमंत्री इन गुणोंसे योग्य होते थे।

आज भारतमें 'स्वराज्य व्यवस्था' चली है। इसमें जो आरोग्य मंत्री रखे जाते हैं उनमें कौनसे गुण हैं इसकी तुलना पाठक इन गुणोंके साथ करें और विचार करके निश्चित करें कि वैदिक कालके आरोग्यमंत्री अच्छे थे या आजके अच्छे हैं।

वेदमंत्रोंमें देवोंके वर्णन हैं। देवोंने क्या किया था, या देव क्या करते थे, यह वर्णन है। यह किस लिये है यह प्रश्न महत्वका है। शतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि "यत् देवा अकुर्वन्, तत् करवाणि" जो देव करते रहे वह मैं करूंगा। देव जगत्‌का हित करते रहते हैं। 'देवो, दानाद्वा, द्योतनाद्वा' देव दान देता है और प्रकाश देता है। जो दान देता है, जो प्रकाश देता है वे ही देव हैं। जो दान देकर आवश्यकता दूर करता है, जो प्रकाश देकर मार्गदर्शन करता है वह देव है। दूसरोंको ऐसी सहायता देव करते हैं। मनुष्य भी ऐसी सहायता देनेका, प्रकाश बतानेका कार्य करें।

यहां अश्विनौ देव नीरोगिता उत्पन्न करते हैं, रोगियोंके रोग दूर करते हैं, आरोग्यका रक्षण करते हैं, आरोग्यके संरक्षणका मार्ग बताते हैं। हम वैसा करते रहें, यह मनुष्योंके लिये मार्गदर्शन यहां मिलता है।

अब इसके पश्चात् आरोग्य मंत्रीके कार्य जो: वेदमंत्रोंमें वर्णित हुए हैं वे कौनसे हैं इसका विचार करेंगे।

प्रश्न

१ वेदकी ज्ञानराज्यकी व्यवस्था कैसी है वह बताइये।

२ देवताएं विश्वराज्यके मंत्री हैं यह कुछ उदाहरण देकर सिद्ध कीजिये।

३ ब्रह्माण्डमें, पिण्डसमूहमें (राष्ट्रमें), तथा पिण्डमें, नियमकी समानता कैसी है यह बताइये।

४ शरीरमें कहां कौनसी देवताएं है यह बताइये।

५ शरीरमें इन्द्रशक्ति कहां उत्पन्न होती है और वह हमें कैसी उपयोगी होती है यह बताइये।

६ शरीरमें अश्विनौ देवता कहां कैसी रहती हैं।

७ अश्विनौ विद्वान् और बुद्धिमान् हैं इसके प्रमाण दीजिये।

८ अश्विनौ ' गंभीर ' हैं इसके प्रमाण दीजिये।

९ अश्विनौ शत्रुका नाश करते हैं इसके प्रमाण दीजिये।

१० वेदमें रोगकृमियोंके वाचक कौनसे पद हैं और ये रोगकृमि किस रीतिसे नष्ट होते हैं?

११ अश्विनौ प्रातःकालमें उठकर क्या करते हैं?

१२ अश्विनौ रत्नोंका क्या उपयोग करते हैं?

१३ आरोग्यमंत्रीके पास संरक्षक सैन्य था यह सिद्ध कीजिये।

१४ अश्विनौ कल्याण करते थे यह सिद्ध कीजिये।

१५ अश्विनौ मधका क्यों उपयोग करते थे?

१६ अश्विनौ सुन्दर थे और तरुण थे यह सिद्ध कीजिये।

१७ अनुशासनशील ये थे इसके प्रमाण दीजिये।

१८ अश्विनौ अपने कार्यमें प्रवीण थे यह सिद्ध कीजिये।

१९ अश्विनौके वाहन कौनसे थे और वे कैसे थे यह बताइये।

२० शतपथ और निरुक्तमें जो अश्विनौका वर्णन है उससे अश्विनौके कौनसे कर्म सिद्ध होते हैं?

२१ नासिकामें रहनेवाले अश्विनौ कौनसे हैं और वे वहां क्या करते हैं?